भारत के आध्यात्मिक दर्शन के संदर्भ में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की प्रासंगिकता

जसबीर सिंह, अध्यक्ष, राजस्थान अल्पसंख्यक आयोग, जयपुर

प्रकृति के आकाश पर तो एक ध्रुवतारा चमकता है लेकिन भारत के आध्यात्मिक आकाश पर अनेकानेक ध्रुवतारे चमके हैं और यह सब ध्रुव तारे अपने आप में ऐसे अनोखे, अद्वितीय, अनूठे व बेजोड़ हैं कि इनमें से एक के भी जीवन दर्शन व जीवन के सार के इशारों को समझना हो तो एक जीवन भी अपर्याप्त है और मोक्ष का लक्ष्य त्याग कर पुनर्जन्म की इच्छा उत्पन्न होती है। ऐसे अनेकानेक ध्रुव तारों को देखें तो चाहे राम हो, चाहे कृष्ण, चाहे पतंजलि, चाहे गोरख, चाहे बुद्ध, चाहे महावीर, चाहे नानक, चाहे कबीर, चाहे फरीद, यह एक ऐसी शृंखला है ऐसा सिलसिला है जो भारत की आध्यात्मिक और सनातन यात्रा में निरंतरता के साथ कायम दायम रहा है। इसी भारत भूमि पर अवतरित हुये विभिन्न जाति, मज़हब, सम्प्रदायों, पंथों के शिखर संतों, भगतों व गुरुओं की पवित्र वाणी को गुरु ग्रंथ साहिब में पूरे अदब व सम्मान के साथ, संगीत के विभिन्न रस व रागों के साथ उच्चारित करते हुये स्थान दिया गया है।

भारतीय विचारधारा के प्रवाह में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की विचारधारा को चिन्तकों ने इसलिए उच्च स्थान दिया है क्योंकि भक्ति लहर की समूची धर्म साधना का सार-स्वरूप, तत्त्व-ज्ञान श्री गुरु ग्रंथ साहिब में एकत्र कर दिया गया है। बेशक अनेक संस्कृत ग्रंथ भी परमार्थ ज्ञान के अनमोल विचारों से भरपूर हैं परन्तु संस्कृत के लोक-भाषा न रहने के कारण साधारण लोग उसे समझने में असमर्थ रह गए। इसके विपरीत श्री गुरु ग्रंथ साहिब संत-भाषा में विरचित ग्रंथ है जिसे हिन्दुस्तान भर में समझना सहज और सरल है। जिसे साधु संतों फकीरों दरवेशों ने संवार कर लोकप्रिय बना दिया। इस प्रकार आध्यात्मिक ज्ञान का यह महान् एवं अपूर्व ग्रंथ समूची मानवता की पावन रहनुमाई करने वाला अद्वितीय ग्रंथ है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सबसे बड़ी विशेषता एवं विलक्षणता यह है कि यह ग्रंथ किसी एक धर्म, पैगम्बर अथवा रहबर तक सीमित नहीं अपितु इसमें विविध धर्मों, समुदायों व जातियों के ३६ महापुरुषों की वाणी का संकलन है। साथ ही इस ग्रंथ को गुरु साहिब ने स्वयं तैयार करवाया और उसे उसके मूल

रूप में कायम रखा गया है। अत: इस रूप से यह पूर्णतया प्रामाणिक ग्रंथ है और इसमें से एक भी अक्षर को बढ़ाया या घटाया नहीं गया है, न जा सकता है। अत: यह अपने मूल रूप में तथा पूर्णतया शुद्ध रूप में स्थित है। इस सन्दर्भ में भाई गुरदास जी ने स्पष्ट लिखा है:

पूरा सतिगुरू जाणीऐ पूरे पूरा ठाटु बनाइआ।
पूरे पूरा तोलु है घटै न वधै घटाई वधाइआ।
(वार ६:१)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के आदि स्वरूप के सम्पादन का पुनीत कार्य पंचम् पातशाह श्री गुरु अर्जुन देव जी ने किया। इस कालजयी ग्रंथ में समूची मानवता का प्रतिनिधित्व करने वाली १४३० पन्नों की अमूल्य निधि है और साथ ही ३१ रागों की मधुर झंकार, जीवन जीने की अनूठी कला तथा प्रभु मिलाप का सहज मार्ग इस ग्रंथ की अमरता का द्योतक है।

श्री गुरु अर्जुन देव जी ने दरबार साहिब के निकट (रामसर) सरोवर के किनारे एकत्रित वाणी को महान् विद्वान् लिखारी भाई गुरदास जी द्वारा लिखवाने का शुभ कार्य १६०१ ई. में प्रारम्भ किया जो कि १६०४ ई. में सम्पूर्ण हुआ। पवित्र स्थान 'श्री हरमन्दिर साहिब' जिसकी नींव भेदभाव से कोसों दूर 'सांई मियां मीर जी' एक मुस्लिम सूफी फकीर से रखवाई थी और इस सर्वसाझे सचखंड श्री हरमन्दिर साहिब का निर्माण होने पर सितम्बर १६०४ ई. में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पहला पावन प्रकाश करवाया तथा बाबा बुड्ढा जी को पहला मुख्य ग्रंथी नियुक्त किया।

दशम् पातशाह श्री गुरु गोविंद सिंह जी ने 'आदि ग्रंथ' को दमदमा साहिब में भाई मनी सिंह जी से पुन: लिखवाया जिसमें नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी को इसमें सम्मिलित किया तथा दशम् गुरु जी ने आने वाले समय की नजाकत को समझते हुए १७०८ ई. में दिव्य ज्योति में विलीन होने से पूर्व महाराष्ट्र नांदेड़ में इस पावन ग्रंथ की परिक्रमा कर माथा टेक कर खालसा को आदेशित किया:

आगिआ भई अकाल की तबै चलायो पंथ।
सभ सिखन को हुक्म है गुरू मानियो ग्रंथ।
गुरू ग्रंथ जी मानिओ प्रगट गुरां की देह।
जो प्रभ को मिलबो चहै खोज सबद मै लेह।।

वस्तुत: यह वाणी समूची मानवता की पथ-प्रदर्शक है जो जीवन मार्ग में किसी भी परिस्थिति में मनुष्य को विचलित नहीं होने देती। यथा :- **गुरबाणी इसु जग महि चानणु करमि वसै मनि आए।।**
(पन्ना-६७)

इस संदर्भ में 'गुरु मानियो ग्रंथ' नामक पुस्तक जो कि सिख मिशनरी कॉलेज द्वारा प्रकाशित है उसमें निम्नलिखित पंक्तियाँ गुरु ग्रंथ साहिब के सन्दर्भ में कितनी सार्थक हैं :

''जिस प्रकार आकाश को कलाई में लेना कठिन है, सूर्य की दूरी को गजों से नहीं नापा जा सकता, अनंत सागर की गहराइयों की तह में से आबदार मोती निकालने मुश्किल हैं, इसी प्रकार गुरु ग्रंथ साहिब जी की पावन पवित्र वाणी से वाहिगुरु की प्रेम, भक्ति, ब्रह्मज्ञान, जीवन की अटल सच्चाइयों तथा आध्यात्मिक वाद के जो परम तत्त्व बयान किए गए हैं उन्हें कलमबद्ध करना असम्भव है।''

इस ग्रंथ में धर्म, जाति, सम्प्रदाय तथा स्थान के भेदभाव से परे ३६ महापुरुषों की वाणी समान आदर भाव से अंकित है जिसे प्रत्येक सिख गुरु रूप मान कर शीश झुकाकर सजदा करता है। यह समन्वयभाव एवं ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' के भाव का विलक्षण उदाहरण है।

३६ महापुरुषों में छह गुरु साहिबान की बाणी :

१.	श्री गुरु नानक देव जी	२.	श्री गुरु अंगद देव जी
३.	श्री गुरु अमरदास जी	४.	श्री गुरु रामदास जी
५.	श्री गुरु अरजन देव जी	६.	श्री गुरु तेग बहादुर जी

१५ भक्त साहिबानों की बाणी

१.	शेख फरीद जी (सूफी मुसलमान)	२.	भक्त जैदेव जी (ब्राह्मण)
३.	भक्त त्रिलोचन जी (ब्राह्मण)	४.	भक्त नामदेव जी (छीपा)
५.	भक्त सदना जी (कसाई)	६.	भक्त बैणी जी (ब्राह्मण)
७.	भक्त रामानंद जी (ब्राह्मण)	८.	भक्त रविदास जी (चमार)
९.	भक्त कबीर जी (जुलाहा)	१०.	भक्त पीपा जी (राजपूत)
११.	भक्त सेण जी (नाई समाज)	१२.	भक्त धन्ना जी (जाट)
१३.	भक्त भीखन जी (मुसलमान)	१४.	भक्त परमानंद जी (ब्राह्मण)
१५.	भक्त सूरदास जी (ब्राह्मण)		

चार गुरसिखों की बाणी

१.	बाबा सुंदर जी (क्षत्रिय)	२.	भाई मरदाना जी (मिरासी)
३.	भाई सत्ता जी (डूम)	४.	भाई राय बलवंड जी (डूम)

भट्ट साहिबानों की बाणी

१.	भट्ट कल्ह सहार जी	२.	भट्ट जाल्प जी
३.	भट्ट कीरत जी	४.	भट्ट भिक्ख जी
५.	भट्ट सल्ह जी	६.	भट्ट हरबंस जी
७.	भट्ट भल्ह जी	८.	भट्ट नल जी
९.	भट्ट गयद जी	१०.	भट्ट मथुरा जी
११.	भट्ट बल जी		

अत: नि:संदेह इस पावन विशाल ग्रंथ के सम्पादन का पुनीत कार्य पंचम् पातशाह जी की अनुपम देन है जो कि लोक-परलोक संवारने में पूर्णतया सक्षम है गुरबाणी प्रमाण :

सचु बाणी सचु सबदु है जा सचि धरे पिआरू।।
हरि का नामु मनि बसै हउमै क्रोधु निवारि।।
मनि निरमल नामु धिआईऐ ता पाए मोख दुआरू।। (पन्ना-३३)

आवश्यकता है तो केवल श्रद्धा एवं प्रेम भाव से इस बाणी को पढ़ सुन कर विचारने की तथा अमल में लाने की अर्थात् इसके अनुसार जीवन बनाने की।

दुनिया के लगभग सभी दार्शनिकों एवं चिन्तकों ने समय-समय पर एक बुनियादी समस्या उठाई कि दु:खों का अंत कैसे हो? चिन्ता क्लेश एवं संताप से छुटकारा कैसे मिले? क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति सुख तो चाहता है पर उसकी तलाश भौतिक एवं क्षणिक सुखों तक ही सीमित है क्योंकि यह इंसानी फितरत है कि उसे पदार्थ प्यारे हो जाते हैं और पदार्थ एवं सुख देने वाला परमेश्वर भूल जाता है। इस सन्दर्भ में गुरबाणी का पावन संदेश है कि परमेश्वर को भुला देने से ये पदार्थ और सुख भी दु:खों में परिवर्तित हो जाते हैं। अत: इस सन्दर्भ में गुरु नानक देव जी ने जपुजी साहिब की पावन वाणी में एक ही पंक्ति में इस समस्या का समाधान प्रस्तुत कर दिया है :

गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ।।
दुखु परहरि सुखु घरि ले जाइ।। (पन्ना-२)

गुरु ग्रन्थ साहिब में इंसान को मृत्यु के भय से मुक्त होने और जीवन की निरन्तरता की ओर इशारा करते हुये और ब्रह्मज्ञानियों से प्रश्न करते हुये एक स्थान पर कहा गया है :

''पवनै में पवन समाया, जोति में जोत रल जाया, माटी माटी होई एक रोवण हारे की कउन टैक,

कौन मुआ रे कौन मुआ, ब्राह्म ज्ञानी मिल करो विचार ये तो चलत भया''।

अर्थात व्यक्ति की साँस पवन में मिल गयी, इंसान का मिटटी से बना तन मिटटी में मिल गया, ज्योति रूपी आत्मा परमात्मा की परमज्योति में विलीन हो गयी तो मृत्यु किसकी हुई? हे ब्रह्म के अन्वेषकों इस पर विचार करो।

सिख पंथ के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी एक महान् आध्यात्मिक गुरु, जिनके जीवन का प्रमुख लक्ष्य परस्पर विरोधी सम्प्रदायों के बीच होने वाले संघर्षों–जिनके चलते भारतीय समाज संत्रस्त था तथा मानवीय मूल्य विघटित हो रहे थे–उनको समाप्त कर परस्पर प्रेम एवं सद्भाव कायम करना था जिसके फलस्वरूप समस्त अंधविश्वास, रूढ़ियों और कर्मकाण्डों से मुक्त होकर समूची मानवता में ईश्वर का दीदार करते हुए समता, मैत्रीभाव, उदारता, विश्व कुटुम्बकम् भाव को दृढ़ करवाना था।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की प्रारम्भता श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चारण की गई वाणी जपुजी साहिब से होती है तथा जपुजी साहिब का प्रारम्भ 'मूल मंत्र' से होता है यथा :

१उ (एक ओंकार) सतिनामु करता पुरखु निरभऊ
निरवैर अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरू प्रसादि।।

अर्थात् परमात्मा एक है, उसका नाम सदैव सत्य है, वह सम्पूर्ण सृष्टि का सृजनकर्ता है, भय से रहित है, वैर भाव से पूर्णतया रहित, आवागमन से मुक्त जन्म से रहित, अर्थात् योनियों में नहीं आता व स्वयं से प्रकाशवान् है क्योंकि उसे बनाने वाला और कोई नहीं और इस प्रकार अनन्त गुणों के मालिक प्रभु को केवल सतगुरु की कृपा से जपा जा सकता है।

वस्तुत: पावन वाणी को पढ़–सुन कर यह सहज ही समझा जा सकता है कि सम्पूर्ण गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी सर्वधर्म समन्वय की अनूठी मिसाल है। कहीं ईश्वर के निर्गुण एवं सगुण स्वरूप का समन्वय है तो कहीं स्त्री–पुरुष, अमीर–गरीब एवं वर्ग जातिगत समन्वय के सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं। कतिपय उदाहरणों से गुरुबाणी के समन्वय भाव की साधना देखने का प्रयत्न करते हैं। जहां गुरु नानक देव जी ने अकाल पुरख परमेश्वर की भव्य एवं विलक्षण आरती प्रकृति द्वारा करते हुए दर्शा कर समन्वय का सुन्दर उदाहरण पेश किया है आप जी का फरमान है :

सभ माहि जोति जोत है सोई।।
तिसदे चानणि सभ महि चानणु होई।। (पन्ना–१३)

अर्थात् समस्त प्राणियों में उसी परमात्मा की ज्योत जग रही है। उसी की ज्योति के प्रकाश से सभी जीवों में प्रकाश है।

इस भूमि की अलग–अलग धाराओं को सम्मान के साथ वर्णित करते हुये लेकिन अंतिम सत्य

को समझाते हुये गुरु गोविन्दसिंह जी ने कहा:

''कोऊ भयो मुंडिया सन्यासी, कोऊ जोगी भयो, कोऊ ब्रह्मचारी कोऊ जती अनुमानबो
हिन्दू कोऊ, तुर्क कोऊ राफजी इमाम साफी मानस की जात सभी एको पहचानबो
कर्ता करीम सोई, राज़क रहीम ओई, दूसरो न भेद कोई मूल भ्रम मानबो
एक ही की सेव, सभही को गुरदेव एक, एक ही सरूप सभै एक जोत मानबो।

इस पावन ग्रंथ के निर्मल उपदेश केवल सिखों के लिए ही नहीं अपितु समूची मानवता के लिए हैं। इसलिए गुरु अमरदास जी उस परमेश्वर से समूची मानवता के कल्याण हेतु अरदास विनती करते हैं कि हे प्रभु ईर्ष्या द्वेष में जल रही मानवता को अपनी दयादृष्टि से किसी भी धर्म मार्ग से बचा लो यथा :

जगत जलंदा रखि लै अपनी किरपा धारि।।
जितु दुआरै उबरै तितै तेहु उबारि।। (पन्ना–८५३)

इसी भाव को दृढ़ करवाती गुरु पंचम् पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी की वाणी–

एक पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई।। (पन्ना–६११)
तथा
ना को बैरी नाही बिगाना सगल संगि हमको बनि आई।। (पन्ना–१२९९)

यही नहीं गुरु साहिब ने तो यहां तक समझाया है कि उस परमेश्वर को कोई किसी नाम से पुकारता है तो कोई किसी नाम से यथा :

कोई बोले राम राम कोई खुदाइ।।
कोई सेंवै गुसईंआ कोई अलाहि।।
कारण करण करीम।। किरपा धारि रहीम।। (पन्ना–८८५)

इसी प्रकार भक्त कबीर जी की वाणी मानवतावादी दृष्टिकोण एवं समन्वय भाव की सुन्दर मिसाल प्रस्तुत करती है। उनके चिन्तनानुसार जब समुचित रचना उस परमेश्वर की है तो किसे भला और किसे बुरा कहेंगे ? यथा :

अवलि अलह नूर उपाइआ कुदरति के सभ बंदे।।
ऐक नूर ते सभु जग उपजिआ कउन भले को मंदे।।
लोगां भरम्मि न भूलह भाई।। खालिक खलक खलक महि।
खालिकु पुरि रहिओ सब थाईं।। (पन्ना–१३४९)

इसलिए संत कबीर जी तो समूची मानवता को पुकार-पुकार कर यही समझा रहे हैं कि हिन्दू और मुस्लिम भाई-भाई हैं, दोनों में कोई अंतर नहीं है क्योंकि दोनों में ही वह ईश्वर (अल्लाह) बसता है यथा गुरबाणी प्रमाण :

अलहु गैबु सगल घट भीतरि हिरदै लेहु बिचारी।।
हिंदू तुरक दुहूं महि एकै कहै कबीर पुकारी।। (पन्ना-४८३)

भक्त पीपा जी की वाणी में भी यही पावन संदेश है कि जो सृष्टि का सृजनकर्ता है और सारे ब्रह्माण्ड में व्याप्त है वही मानव शरीर में भी है। अगर पूर्ण गुरु मिल जाए तो अन्दर बसता परमात्मा प्रत्यक्ष दिखाई देने लगेगा।

जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजे सो पावै।।
पीपा प्रणवै परम तत्तु है सतिगुरू होइ लखावै।। (पन्ना-६९५)

इसलिए बाबा फरीद जी बुरा करने वालों का भी भला करने का पावन संदेश देते हुए समझाते हैं :

फरीदा बुरे दा भला करि गुस्सा मनि न हंडाइ।।
देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ।। (पन्ना-१३८२)

गुरु ग्रंथ साहिब की वाणी के अनुपम उपदेश किसी धर्म या जाति विशेष के लिए नहीं हैं अपितु सारी मानव जाति के लिए समान रूप से यहां चारों वर्णों के लिए साझा उपदेश है :

खत्री ब्राह्मण सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा।।
गुरमुखि नाम जपै उधैर सौ कलि महि घटि घटि नानक माझा।। (पन्ना-७४७)

इसी प्रकार समन्वय भाव के दर्शन हमें भक्त नामदेव जी की वाणी में होते हैं उनका पावन फरमान है :

सभै घट रामु बोले रामा बोलें।।
राम बिना को बोले रे।।रहानु।।
एकल माटी कुंजर चीटी भाजन हैं बहु नाना रे।।
असथावर जंगम कीट पतंगम घटि घटि रामु समानारे।। (पन्ना-९८८)

अर्थात् समस्त शरीरों में वह परमेश्वर ही बोल रहा है उसके बिना कोई कैसे बोल सकता है। छोटे से छोटे प्राणी चींटी से लेकर हाथी तक की रचना उस प्रभु ने एक ही मिट्टी से की है।

इस प्रकार अनेकता में एकता, धर्म, दर्शन, इतिहास, प्राचीन गाथाएं, मानव मूल्य विशेष की परिस्थितियाँ सब कुछ इस पावन ग्रंथ में खोजा जा सकता है। गुरु नानक देव जी के पावन उपदेश ''किरत करो, नाम जपो और वंड छको'' अर्थात् ''मेहनत की कमाई, एक ईश्वर की आराधना तथा मिल बाँट कर खाना''। इस सन्दर्भ में पावन वाणी गुरु ग्रंथ साहिब में यत्र-तत्र दृष्टिगत होती है। इस प्रकार सर्वधर्म समन्वय, नैतिक मूल्यों से ओत- प्रोत पावन वाणी साम्प्रदायिक एकता, अखण्डता एवं मानवतावादी दृष्टिकोण को दृढ़ कर मानव कल्याण का मार्ग सुझाती है। आवश्यकता है तो इसे पढ़-सुन कर इसके पावन उपदेशों को आत्मसात कर इसके अनुसार जीवन बना कर अपना मानव जीवन सफल बनाने की।

अन्त में अपनी बात गुरु गोबिन्द सिंह जी जो सिख परम्परा के दसवें गुरु थे और जिनका हाल ही देश व दुनिया में ३५०वाँ प्रकाश पर्व पूरे उत्साह के साथ मनाया गया है, के बारे में उल्लेख करते हुये समाप्त करूंगा जिनका काल १६६६ से १७०८ का रहा। उन्होंने भक्ति के साथ शक्ति, पीरी के साथ मीरी और शास्त्र के साथ शस्त्रों की आवश्यकता पर जोर देते हुये अत्याचार व जबरन धर्मान्तरण के खिलाफ लड़ने का उद्घोष किया। गुरु गोविन्द सिंह जी एक ही व्यक्तित्व में Saint, Soldier व Scholar (सन्त, सिपाही व साहित्यकार) का समावेश थे। ज़फ़रनामा, जो फारसी में लिखा एक लम्बा चुनौतीपूर्ण पत्र है, उन्होंने उस समय के बादशाह औरंगजेब को लिखा उसमें उन्होंने धर्म की रक्षा हेतु युद्ध को जायज ठहराते हुये लिखा:

चूंकर अज हम्म हील-ते दर गुजस्त
हलाल अस्त बुर्दन न शमशीर दस्त

अर्थात् जब अपने धर्म की रक्षा के सारे प्रयास और न्याय पाने की तमाम कोशिशें असफल हो जायें तो शस्त्र उठा लेना जायज है।

i.e. When all has been tried, yet justice is not in sight, it is then right to pick up the sword, it is then right to fight.

भगवान् श्री कृष्ण के हज़ारों वर्ष पूर्व दिये गये गीता के संदेश को ही गुरु गोबिन्द सिंह जी के उपर्युक्त शब्द प्रेरित करते हैं। महर्षि अरविन्द ने भी अपने ग्रन्थ "Life Divine" में कहा है कि ''राष्ट्रधर्म ही वर्तमान का धर्म है''।

स्वतन्त्रता की लड़ाई में जब क्रांतिकारियों के योगदान को कम करके आंका जा रहा था उस

समय गुरु गोविन्द सिंह जी से प्रेरित बिहार में जन्मे राष्ट्रवादी कवि रामधारीसिंह जी दिनकर ने कहा था:

जो पुण्य अहिंसा जप रहे उन्हें जपने दो
जैसे सदियां थक चुकीं उन्हें भी थकने दो
हम देख चुके सब पुण्य कमाकर, सौभाग्य दान गौरव अभिमान गंवाकर
वो पीयें शीत तुम आत्मधाम पीयो रे, वो जपें राम तुम बनके राम जियो रे
ये नहीं शांति की गुफा, युद्ध है रण है, तप नहीं आज केवल तलवार शरण है
ललकार रहा भारत को आज मरण है, हम जीतेंगे यह समय हमारा प्रण है।

आज हम आज़ाद हैं इसलिये तलवार की ज़रूरत नहीं है लेकिन भारत को दुनिया में शक्तिशाली स्थान पर विश्वगुरु के रूप में स्थापित करने हेतु तलवाररूपी संकल्पों की जरूरत है, इसका हमें सदा-सदैव अहसास रहे और हम प्रतिबद्ध रहें।